दैनिक नैतिक प्रभात

(बाल कहानी संग्रह) फरवरी - 2024

मिशन शिक्षण संवाद
दैनिक नैतिक प्रभात
(बाल कहानी संग्रह)

अनुक्रमणिका माह फरवरी - 2024

क्रमांक	बाल कहानी	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	बहुत जरूरी	सरिता तिवारी	1
2	ओ इज्या मेरि	दीवाल सिंह कठायत	2
3	गरीब माँ का आँचल	पुष्पा शर्मा	3
4	आलस बुरी बला	शिखा वर्मा	4
5	पुण्य	शमा परवीन	5
6	स्वावलंबन	धर्मेन्द्र कुमार शर्मा	6
7	बेटी एक चमत्कार	जुगल किशोर त्रिपाठी	7
8	मददगार	साधना यादव (छात्रा)	8
9	उजाड़	दीवान सिंह कठायत	9
10	शरारती सीनू	शिखा वर्मा	10
11	ईमानदारी बड़ा फल	अंजनी अग्रवाल	11
12	फुटबॉल	शमा परवीन	12
13	बगुला और सर्प	जुगल किशोर त्रिपाठी	13
14	करनी का फल	राहुल शर्मा	14
15	लिली और गौरैया	शिखा वर्मा	15
16	चॉकलेट	शमा परवीन	16
17	ललक	जुगल किशोर त्रिपाठी	17
18	शेर की उदारता	जुगल किशोर त्रिपाठी	18
19	स्वच्छता	रचना तिवारी	19
20	मिनी का लंच	शिखा वर्मा	20
21	पार्टी	शमा परवीन	21
22	पहचान	जुगल किशोर त्रिपाठी	22
23	सबक	राशि (छात्रा)	23

संस्कार संदेश दिनांक - 01-02-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 12/2024

बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार

मिशन शिक्षण संवाद

बहुत जरूरी

आज खुशी के परिवार में बेहद ही खुशी का माहौल था। उसकी माँ तो फूले न समा रही थी। वह विद्यालय आकर सभी शिक्षकों से मिलकर उनके द्वारा किये गए सहयोग के लिए नतमस्तक हो आभार व्यक्त कर रही थी, क्योंकि उसकी बेटी शिक्षकों के निर्देशन और सहयोग से डॉक्टर जो बन गयी थी। ज्यादा पुरानी बात नहीं है। खुशी का स्कूल में दाखिला बडी ही मुश्किल से शिक्षकों के कारण हो पाया था, क्योंकि उसके पिता जी बहुत ही पुराने विचारों के थे, जो लडकी का पढ़ना-लिखना जरुरी नही समझते थे। वे कहते थे कि लडकी तो पराया धन होती है। पढ-लिख कर क्या करेगी? उसे तो दूसरे के घर जाना है। शिक्षकों के बहुत समझाने पर खुशी की पढ़ाई के लिए वे राजी हुए थे।

खुशी बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि की बालिका थी। उसने पढाई के साथ ही साथ विद्यालय की खेलकूद सहित अन्य गतिविधियों में भी भाग लिया। वह विद्यालय में लडकियों के लिए बने मंच "मीना मंच" की पावर एंजेल गर्ल थी। उसकी माँ तो उसकी पढ़ाई की शुरुआत से पक्षधर थी। धीरे-धीरे उसके पिताजी तथा दादा-दादी सभी उसकी प्रतिभा के कायल हो रहे थे। शिक्षकों के सहयोग से वह हर बाधा पार करके आगे बढ़ती गयी। आज खुशी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही है। उसके माता-पिता परिवार के साथ उसके शिक्षक भी गदगद हैं। उसके शिक्षक सभी को समझाने में भी सफल रहे हैं कि बहुत जरूरी है शिक्षा बालिका के लिए भी।

संस्कार संदेश

शिक्षा जीवन का है उजियारा।
सबको मिले इसका अवसर न्यारा।।

लेखिका

सरिता तिवारी (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय कन्दैला मसौधा (अयोध्या)

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार सदेश
दिनांक - 02.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 13/2024
बाल कहानी
दिन - शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

ओ इज्या मेरि

"अम्मा! बच्चा तो बच गया है, पर उसकी माँ को नहीं बचा सके! काफी प्रयास किया टीम ने", आप्रेशन थियेटर से बाहर निकल दादी को ढ़ाढ़स बँधाते हुए बताया नर्स ने। "ओ इज्या मेरि, मेरि आब् कम्मरै टुटि गे" कहते हुए दादी दहाड़ें मारकर रोने लगी। साथ आये लोगों ने किसी तरह अम्मा को संभाला और दो लोगों के साथ उन्हें घर पर भेज, मृत माँ के अन्तिम संस्कार की तैयारी में जुट गये। तीन दिन बाद 'खुशियों की सवारी' से नवजात गाँव की किसी अन्य महिला के साथ घर पहुँचा। कहाँ खुशियाँ? मातम पसरा था पूरे गाँव में। दादी का अब भी रोते-रोते बुरा हाल था। वह बार-बार 'ओ इज्या मेरि-ओ इज्या मेरि' कहते जा रही थी। "सासू कमर बॉधो चाहे अफूं नै रैइ, तुमन भलो भौ दी जारै। तैक मुख चाओ ,आब् तुमिले पावण छु तो " कहते हुए कई पड़ोसी महिलाओं ने अम्मा को ढ़ाढ़स बँधाया और बच्चे के पालन-पोषण की जिम्मेदारी का भान करा, अपनी-अपनी ओर से भरसक मदद का आश्वासन दे उनके आँसू पोछने में मदद करने लगीं। अब तक बच्चे का पिता भी शहर से घर पहुँच चुका था। दादी और पिता दोनों अब बच्चे को संभालने में लग गये। गाँव की महिलायें बारी-बारी से आकर बच्चे को अपने स्तनों का दूध पिला जाती। शेष समय में गाय का दूध पर्याप्त रहता। ईश्वर बड़ा दयालु है। बच्चा ठीक से विकास करता रहा है।

प्राइवेट नौकरी कर पेट पाल रहा पिता एक माह बाद नौकरी पर चला गया। शहर में साथ ही रखने की शर्त पर बड़ी मुश्किल से उसका दूसरा ब्याह हो पाया। दादी और पोता दोनों घर पर ही दिन व्यतीत करते रहे। बच्चा अब स्कूल जाने लायक हो चुका था। अप्रैल में अम्मा एक दिन बच्चे को पीठ पर लादकर स्कूल में पहुँची और 'ओ इज्या मेरि, कहते हुए फर्श पर बैठ गयी। आज ही विद्यालय में स्थानान्तरित होकर पहुँची शारदा बहिनजी जो अन्दर कक्षा में बच्चों से परिचय प्राप्त कर रही थी। आवाज सुनकर बरामदे में आ गयीं। गोद में सुदर्शन बालक को लिए अम्मा, उन्हें पहली नजर में मदर टेरेसा सी लगीं। "बहिन जी पैदा होते ही मस्तारि मरि गे येकि, मैले धो-धो कै पाइ राखो यो। येक नाम लेखि दियो इस्कूल में। मारिया नै ये कैई म्यार परांण छु यो, नानतिनन लै डरा दिया क्वे ये कैई माराल" बिना बहिन जी के पूछे ही दादी सब एक साँस में कह गयी। उन्हें बहिन जी की शक्ल सुनील की माँ सी लग रही थी। "फिकर न करो अम्मा ! मैं इसे अच्छी तरह पढ़ाऊँगी.. इसका पूरा ध्यान रखूँगी" कहते हुए मैम ने बच्चे को दाखिला दे दिया। शराबी पति से वर्षो तक परेशान रहने के बाद शारदा बहिन जी ने तलाक लेकर दुर्गम के इस विद्यालय में अपना ट्रान्सफर करा शिक्षण में ही रमकर अपना शेष जीवन काटने का निश्चय कर लिया था। आज जब सुनील का नाम इस विद्यालय में वह पहली बार लिख रहीं थी तो उनकी अन्तर आत्मा ने महसूस किया कि उन्हें सुनील के रूप में ईश्वर ने बच्चा दे दिया है। अब इसे पढ़ा-लिखाकर सुयोग्य व्यक्ति बना लूँ, तो मेरा जीवन धन्य हो जाएगा। उन्होंने सुनील को गोद सा ले लिया। साक्षात सरस्वती की प्रतिमूर्ति शारदा बहिन जी के समर्पित शिक्षण से दुर्गम का यह स्कूल ब्लॉक के अव्वल विद्यालयों में जाना जाने लगा। शारदा के संरक्षण में रह रहा सुनील पूरे विकासखण्ड में पाँचवी की परीक्षा टॉप कर नवोदय प्रवेश परीक्षा भी पास कर गया। दादी को स्कूल में बुला जब यह खबर बहिन जी ने उन्हें सुनायी तो फिर 'ओ इज्या मेरि' कह अम्मा ने सुनील को गले से लगा लिया और बहिनजी की ओर करुणा भरी दृष्टि डाली। दोनों की आँखें डबडबा आयीं। नवोदय विद्यालय से इण्टर करने के उपरान्त सुनील ने अच्छे अंकों में उच्च शिक्षा पूर्ण करते हुए पहले ही प्रयास में आइ ए एस क्रैक कर लिया। अब वह अपने ब्लॉक भर में कलेक्टर बनने जा रहा पहला व्यक्ति था। इधर शारदा मैम साठ वर्ष की उम्र पूर्ण कर अब सेवा निवृत्त होने जा रही थीं। गाँव वालों ने संयुक्त रूप से दोनों को सम्मानित करने का निश्चय कर विद्यालय में भव्य आयोजन रखा। ढोल-नगाड़े की धमकती आवाज में लोगों ने दोनों पर पुष्प वर्षा करते हुए उन्हें फूल-मालाओं से लाद दिया। दादी अम्मा ने कसकर शारदा बहिन जी को गले से लगा लिया। अब दोनों जी भरकर रोते जा रहे थे, तभी सुनील ने दोनों के चरणों में अपना शीश रख दिया। दोनों "ओ इज्या मेरी ईईई" कहते हुए उसे प्रेम से चूमने लगे। दोनों के ही सांसारिक संस्कार अब सन्तोष में परिवर्तित हो चुके थे।

संस्कार सन्देश-

संस्कारों और अच्छी शिक्षा से युक्त होकर बालक निश्चित ही ऊँची पदवी पाता है।

लेखक-
दीवान सिंह कठायत (प्र०अ०)
रा० आ० प्रा० वि० उडियारी, पिथौरागढ़

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad
@shikshansamvad.com
9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 03.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 14/2024
बाल कहानी दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

गरीब माँ का आँचल

एक गाँव में मधु नाम की एक महिला अपने तीन बच्चों के साथ मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण कर रही थी। साथ ही अपने बच्चों को गाँव के स्कूल में पढ़ने को भेजती थी। उसके बच्चे पढ़ाई में बहुत होशियार थे। बच्चे बड़े हुए और अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करने लगे। बड़ा बेटा और बेटी शहर जाकर नौकरी की तलाश में पहुँचे। पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने छोटी-सी नौकरी कर ली और अपनी माँ का सहयोग करने लगे। छोटी बहन का सारा खर्चा उन्होंने उठा लिया। माँ यह देखकर बहुत प्रसन्न होती थी। एक दिन बेटे का रिश्ता आया और लड़की वाले बेटे की शादी के लिए राजी हो गये। क्योंकि बेटा बहुत होशियार था। जब शादी की डेट निश्चित हो गयी, तब माँ अन्दर ही अन्दर परेशान होने लगी, कि शादी के लिए धन कहाँ से लाऊँगी। कैसे मेरी बेटी की शादी होगी। उसने अपने करीबी रिश्तेदारों से बात की, लेकिन किसी ने भी उसका सहयोग नहीं किया। उसके पास अपना घर था उसने गिरवी रख दिया और शादी की तैयारी शुरू कर दी। सब कुछ अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ। बहू घर में आ गयी। कुछ दिन बाद बेटा अपनी नौकरी पर चला गया। बहू घर में सारा काम करती और माँ की सेवा करती थी।

एक दिन बहू के माता-पिता घर में आये और बहू को कुछ सिखाने लगे। उनके जाने के बाद बहू का रवैया बदल गया। उसने बेटे से कहा कि- "मैं आपके साथ शहर में रहूँगी।" बेटे ने कहा- "ठीक है।" गाँव वापस आकर माँ से कहा- "मुझे मेरा हिस्सा दे दीजिए। मैं आपकी बहू के साथ शहर में ही रहूँगा।" माँ ने कहा- "बेटा! मैंने घर को गिरवी रखकर तेरी शादी की थी, क्योंकि मेरे पास धन नहीं था।" यह सुनकर बेटा नाराज हो गया। बेचारी माँ का बुरा हाल हो गया। जब यह बात बड़ी बेटी को मालूम पड़ी तो उसने कहा- "माँ! आप चिन्ता न करें। भाई को जितना पैसा चाहिए, मैं भिजवा देती हूँ।" बड़ी बेटी पढ़ाई के साथ अच्छी नौकरी भी करती थी। जितना भाई ने माँगा, उसने दे दिया। वह अपनी पत्नी को लेकर शहर चला गया। गरीब माँ का आँचल बहुत व्याकुल होने लगा। तब दोनों बेटी अपनी माँ के गले लग गयीं और बोलीं- "माँ! आप चिन्ता न करें। आज से आप हमारे साथ ही रहेंगी।" और फिर तीनों एक साथ रहने लगे। अब छोटी बेटी की भी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। एक दिन वह तीनों बाजार गयीं। सामान खरीदते समय माँ की बचपन की सहेली मिल गयी। दोनों में बातचीत हुई। दोनों एक-दूसरे को अपनी-अपनी आप बीती बताने लगीं। वह सहेली बहुत मालदार थी। उसके दो बेटे थे। सहेली ने दोनों बेटियों को अपने बेटों के लिए माँग लिया। समय पर वह शादी करवाकर दोनों बेटियों को बहू के रूप में अपने घर ले गयी। बाद में अपनी सहेली को भी अपने साथ रख लिया। कुछ समय बाद मधु का जो घर गिरवी रखा था, उसे छुड़वा दिया। एक दिन बेटा जब गाँव पहुँचा तो गाँव के लोगों ने उसको बहुत बुरा-भला कहा। तब बेटे को अपने किये पर पछतावा हुआ और माँ की तलाश करने लगा। जब पता चला तो वह माँ के पास पहुँचा और माफी माँगी। माँ की ममता अलग ही होती है बेटे को गले से लगा लिया, लेकिन गरीब माँ का आँचल बहुत मजबूत होता है। अपने बेटे को माफ कर दिया और खुशी-खुशी दोनों बेटियों से कहा- "आप अपने परिवार के साथ अच्छे से के साथ रहो। मैं अपने घर जाना चाहती हूँ।" बेटियों ने 'हाँ' कह दिया। माँ अपने बेटे और बहू के साथ गाँव वापस आ गयी और वे सभी प्रसन्नतापूर्वक साथ-साथ रहने लगे।

संस्कार सन्देश-

इस कहानी से यही सीख मिलती है। कभी किसी की बातों में नहीं आना चाहिए, अन्यथा घर का सुख-चैन छिन जाता है।

लेखिका
पुष्पा शर्मा (शि०मि०)
पी० एस० राज़ीपुर, अलीगढ़

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad
@shikshansamvad.com
9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 05.02.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 15/2024

बाल कहानी

दिन- सोमवार

मिशन शिक्षण संवाद

आलस बुरी बीमारी

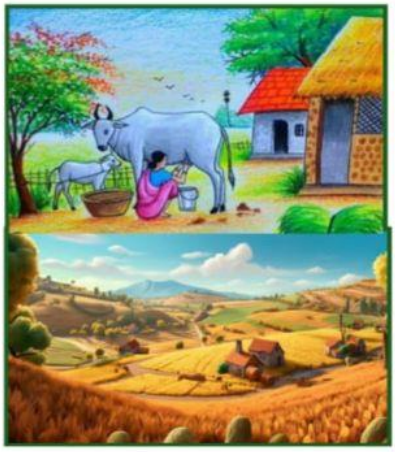

फूलपुर गाँव के लोग बहुत आलसी थे। वे अपने दिन इधर-उधर घूमने, झगड़ने, सोने और शिकायत करने में बिताते थे। एक बार गाँव में भयंकर सूखा पड़ा। फसलें सूख गयीं। कुएँ सूख गये। ग्रामीणों के सामने भुखमरी का खतरा पैदा हो गया। मेहनती किसान और मजदूर तुरन्त काम करने में जुट गये। उन्होंने नये कुएँ खोदे। अपने खेतों की सिंचाई की और गाँव के बाहर जाकर खाने-पीने की तलाश की, लेकिन आलसी लोगों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। वे छाया में लेटे रहते और खाने के आखिरी भण्डार को खाकर जीवन गुजारते रहे। खाली बैठकर ईश्वर को कोसते रहे कि जीवन कितना कठिन है! वे अपने साथी ग्रामीणों के प्रयासों की खिल्ली उड़ाते और यही सोचा करते कि उनकी ओर से बिना किसी प्रयास के अन्त में सब कुछ ठीक हो जायेगा। दिन बीतते गये। स्थिति और विकट होती गयी। मुट्ठी भर मेहनती ग्रामीणों के इतने प्रयासों के बावजूद चारों ओर खाने के लिए पर्याप्त भोजन और पानी नहीं बचा था। शीघ्र ही आलसी लोगों को उनकी अकर्मण्यता का कुप्रभाव महसूस होने लगा। वे कमजोर और बीमार हो गये। स्वयं के लिए या समाज में योगदान करने में असमर्थ थे। जैसे-जैसे स्थिति बिगड़ती गयी, उन्हें अपनी गलतियों का एहसास हुआ, पर अब बहुत देर हो चुकी थी। आखिरकार, कुछ दिनों बाद सूखे का खतरा टल गया और गाँव में जीवन फिर से लौट आया।मेहनती किसान अपने निःस्वार्थ प्रयासों के लिए नायक के रूप में सम्मानित किये गये। आलसी लोगों की समझ में अब बात चुकी थी कि केवल बातों से नहीं, काम करने व कोशिश करने से परिस्थितियाँ बदली जा सकती हैं।

संस्कार संदेश-

आलस बुरी आदत है। कड़ी मेहनत और परिश्रम से स्वयं की व आस-पास के लोगों की भी भलाई होती है।

लेखिका-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार सदेश दिनांक - 06.02.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 16/2024

बाल कहानी दिन- मंगलवार

मिशन शिक्षण संवाद

पुण्य

सुबह का खूबसूरत नजारा था। चारों तरफ हरे-भरे पेड़-पौधे पास में प्यारी सी बहती नदी चिड़ियों की चहचहाहट थी। सोनू अपने मित्रों के साथ प्रतिदिन सुबह-सुबह टहलने के लिए घर से बाहर जाता था और यह प्यारा नज़ारा हर रोज अपनी आँखों से देखता था। उसके बाद घर जाकर नहा-धोकर तैयार होकर समय से स्कूल उन्ही मित्रों के साथ चला जाता था।एक दिन की बात है। सोनू सुबह टहलते-टहलते बहुत दूर अपने मित्रों के साथ निकल गया। लौटते-लौटते स्कूल जाने में बहुत देर हो गयी। सभी दोस्तों ने निश्चय किया कि आज बहुत देर हो गयी है, इसलिए आज हम लोग स्कूल नहीं जायेंगे। परन्तु सोनू ने कहा-, "एक तो हम लोगों ने गलती की, कि हम लोग टहलते-टहलते बहुत दूर निकल गये। वापस आते-आते देर हो गयी और दूसरी गलती स्कूल न जाकर करेंगे। मैं तो स्कूल जरूर जाऊँगा, भले ही स्कूल में डाँट पड़ जाये। तुम भी लोग तैयार होकर जल्दी से आओ! स्कूल चलते हैं सब साथ में, जैसे रोज जाते हैं अगर तुम लोग नहीं आये तो कल से मैं तुम लोगों के साथ टहलने नहीं जाऊँगा।" सोनू की बात सुनकर सभी मित्रों ने स्कूल जाने के लिए हामी भरी। सभी मित्र घर जाकर जल्दी-जल्दी तैयार हुए और स्कूल के लिए रवाना हो गये। स्कूल पहुँचते ही सोनू और उसके मित्रों ने देखा कि प्रार्थना सभा समाप्त हो गयी थी। कक्षाएँ लग चुकी थीं। शिक्षक ने पूछा-, "बच्चों इतनी देर क्यों हो गयी?" सोनू ने तुरन्त जवाब देते हुए कहा कि-, " सर जी, क्षमा करें! आज सुबह-सुबह हम लोग टहलते-टहलते बहुत दूर निकल गये थे। वापस आते हुए देर हो गयी। बहुत जल्दी-जल्दी तैयार होकर हम लोग आये हैं। आज के लिए क्षमा कर दीजिए। आगे ऐसा नहीं होगा।" शिक्षक ने मुस्कुराते हुए कहा-, " ठीक है बेटा! कोई बात नहीं, आगे से ध्यान रखना। तुम सब प्रतिदिन समय से आते हो, इसलिए आज छोड़ रहा हूँ। प्यारे बच्चों! अब आप अपनी-अपनी कक्षा में जाओ।" सोनू अपने दोस्तों को देखकर मुस्कुराया और कक्षा में चला गया। सोनू के दोस्तों ने भी सोनू को दिल से धन्यवाद कहा कि-, "स्कूल में अनुपस्थित होने से आज सोनू ने बचा लिया।" सच में सोनू सच्चा मित्र है, क्योंकि यह अच्छाई की तरफ हम सभी को ले जाता है। सोनू को भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसने खुद के साथ अपने मित्रों को भी गलती करने से बचा लिया। वास्तव में सच्चा मित्र वही है, जो गलती करने से रोके और अच्छाई की तरफ ले चले। विद्यालय प्रतिदिन जाना, मन लगाकर पढ़ना पुण्य का काम है हम सबको यह पुण्य का काम करना चाहिए और अपने मित्रों को भी इस पुण्य में भागीदार बनाना चाहिए।

संस्कार सन्देश-

हमें सदैव अच्छाई के रास्ते पर चलना चाहिए और अपने मित्रों को भी सही राह पर चलने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

लेखिका-

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com /shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 07-02-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 17/2024
बाल कहानी दिन - बुधवार
मिशन शिक्षण संवाद

स्वावलंबन

एक कस्बे में एक सामान्य परिवार निवास करता था। परिवार में पति हरिओम और पत्नी दुलारी और दो बेटे थे- बड़ा बेटा मुकेश और छोटा बेटा अमित। दोनों की स्कूल जाने की उम्र हो गयी थी। दोनों का नजदीकी विद्यालय में नाम लिखवा दिया गया। पिता गाँव गाँव जाकर कपड़े या अन्य मौसमी वस्तुएँ बेचते थे।

माता-पिता कम पढ़े-लिखे थे। उनको बच्चों की पढ़ाई की बड़ी चिन्ता रहती थी कि हम तो नहीं पढ़ सके, बच्चों को अच्छी शिक्षा देने की कोशिश करेंगे। इसी प्रयास में दोनों कड़ी मेहनत करते थे।

पिता के मन में था कि बड़ा बेटा मुकेश वकील बने और छोटा बेटा अमित पुलिस में जाये। धीरे धीरे पढ़ाई आगे बढ़ी और बड़ा बेटा चाहता था कि वह खेलों में अपना भविष्य बनाये। खेलों में उसकी ज्यादा रुचि थी।

छोटा बेटा अमित दसवीं पास होने के बाद ही पुलिस की तैयारी करने लगा और बारह पास होने के कुछ समय बाद वह पुलिस में भर्ती हो गया।

बड़ा बेटा मुकेश बारवीं के बाद अपने पिता के बताये अनुसार पढ़ाई में लगा रहा, लेकिन वह पढ़ाई उसके मन मुताबिक नहीं थी। कोशिश करते-करते कुछ वर्ष बीत गये। सफलता कोसों दूर थी।

उसके बाद पिता ने अपने पड़ोस में रहने बाले शिक्षाविद् से सलाह ली तो उन्होंने बताया कि मुकेश को जिस कार्य में रुचि है। उसे वह करने दो। उसके बाद पिता ने बेटे से कहा-, "मुकेश! अब तुम्हारी जिस कार्य में रुचि हो, उसी कार्य पर ध्यान लगायें।"

कुछ ही सालों में मुकेश ने अलग-अलग खेलों में अपना नाम खूब आगे बढ़ाया और उसे भी सफलता प्राप्त हुई।

संस्कार संदेश

रुचिकर कार्यों को करने से जल्दी और निश्चित सफलता मिलती है। बच्चों के ऊपर अनावश्यक दबाव नहीं डालना चाहिये।

लेखक
धर्मेन्द्र कुमार शर्मा (स०अ०) कन्या० प्रा० वि०- टोड़ीफतेहपुर, गुरसरांय (झाँसी)

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 08-02-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 18/2024
बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार
मिशन शिक्षण संवाद

बेटी एक चमत्कार

किसी गाँव में एक परिवार रहता था। उस परिवार में नीलेश अपनी पत्नी रुपा, छोटा बेटा अभिनीत, बहू दीपिका, नातिन भूमि के साथ रहता था। नीलेश का बड़ा बेटा आशीष गुड़गाँव में एक बिदेशी कम्पनी में प्रभारी के रुप में कार्यरत था।

नातिन भूमि के जन्मदिन पर नीलेश को बड़ी खुशी हुई थी। नीलेश चाहता भी था कि उसके घर में लक्ष्मी आये। घर के अन्य सदस्य बेटा चाहते थे। बहू दीपिका घर का कोई काम नहीं करती थी। वह हर समय पति के साथ रहने की जिद करती थी। वह कभी भी ससुराल में कोई काम नहीं करती थी। दिनभर मोबाइल पर व्यस्त रहती थी। दिन-भर गाने सुनना और फोन पर बातें करना यही उसकी दिनचर्या थी। वह सभी से लड़ती थी।

वैसे तो घर में उसका स्वभाव देखकर कोई नहीं चाहता था कि इसे कोई सन्तान हो। सभी उससे छुटकारा पाना चाहते थे। छोटा बेटा अभिनीत बी०एड० कर रहा था और घर पर बच्चों को पढाया करता था। इससे वह तेरह-चौदह हजार रुपए मासिक कमा लिया करता था। इसके साथ ही वह खेती का काम भी देखता था। अभिनीत के माता-पिता चाहते थे कि वह बाहर रहे और आगे अपना कैरियर बनाये। किन्तु अभिनीत माँ-बाप को गृह-कलह में फँसा छोड़कर नहीं जाना चाहता था।

ऐसे हालातों में एक बेटी का जन्म होने से सभी को चिन्ता होने लगी कि बहू कैसे उसे अच्छे संस्कार देकर पोषित करेगी और पढ़ायेगी? सबकी चिन्ता स्वाभाविक थी। दीपिका अपने पति से भी शादी के बाद से ही झगड़ने लगी थी। इसीलिए कोई भी उसे पति के साथ भेजने को तैयार नहीं होता था। नीलेश का बड़ा बेटा भी उससे बहुत परेशान था। वह भी उसे साथ नहीं ले जाना चाहता था।

धीरे-धीरे महीना गुजरा। बेटी के आने से चमत्कार हुआ। सभी उसे हाथों पर लिए रहते। भूमि ने सबका मन मोह लिया था। धीरे-धीरे वह बड़ी हुई। तीन वर्ष की होने को थी। भूमि के आने से सभी को पता नहीं चला कि तीन वर्ष कैसे गुजर गये। दीपिका का व्यवहार ज्यों का त्यों था। किन्तु भूमि के साथ रहते हुए सब उसके व्यवहार से अछूते रहते थे। भूमि के पास होने से सब लोग लड़ाई-झगड़ा भूल जाते थे। भूमि भी अब अपने पापा को चाहने लगी थी। वह रोज तीनों समय पापा से बात करती और सुबह-शाम वीडियो कॉल करवाती। इस प्रकार उसकी तोतली बोली, खेल से सभी को मानो नया जीवन मिल गया था। भूमि के पापा जब भी माह में दो-चार दिन के लिए घर आते तो भूमि हमेशा उनके साथ रहती।

अब भूमि भी समझने लगी थी कि ये हमारे पापा हैं। वह हर समय पापा से साथ ले जाने और बुलाने की जिद करती। उसके पापा उससे कहते कि-, "तुम अपनी माँ को कहो कि अगर साथ रहना है तो पहले अपना व्यवहार सुधारे। सबसे अच्छी तरह बोले। घर के काम में दादी की मदद करे। अगर वह तीन माह अच्छी तरह से व्यवहार करेगी तो वह उसे माँ सहित लिवा ले जायेगा।" भूमि जानती थी कि उसकी माँ सबसे लड़ती है। वह माँ को डाँटती भी थी, लेकिन वह नहीं मानती थी। अब जब भूमि ने कहा तो उसने अपना व्यवहार बदलना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे वह घर का काम करने लगी और सभी से प्रेमपूर्वक वर्ताव करने लगी। बहू के पिता ने भी उसे समझाया। पहले यही पिता उसे उल्टी शिक्षा देते थे, जिसके कारण दीपिका सभी से गलत व्यवहार करती थी। उसके इस व्यवहार से सभी खुश रहने लगे। घर की खुशियाँ फिर से वापस लौट आयीं। समय आने पर आशीष दीपिका को भूमि के जन्म-दिन के बाद अपने साथ शहर ले गया और वे वहाँ हिल-मिलकर प्रेमपूर्वक रहने लगे। नीलेश का छोटा बेटा अभिनीत भी बाहर जाकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुट गया।

संस्कार संदेश

बेटी सचमुच चमत्कार से कम नहीं होती हैं। अतः हमें सदैव इनका मान-सम्मान करना चाहिए।

लेखक
जुगल किशोर त्रिपाठी प्रा० वि०- बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

संस्कार सदेश दिनांक - 09.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 19/2024
बाल कहानी दिन- शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

मददगार

एक गाँव था। उस गाँव का नाम रामपुर था। रामपुर गाँव के पास से बहुत घना वन था। उस वन में शेर, चीता, भालू, हिरण, लोमड़ी, बन्दर आदि बहुत से जंगली जानवर रहते थे। रामपुर के लोग उन जानवरों के डर से कभी वन में लकड़ी आदि लेने नहीं जाते थे। वन में फलों के बहुत से पेड़ थे। लेकिन उनके पानी पीने के लिए एक छोटा सा तालाब था। कुछ दिनों बाद धीरे-धीरे वह तालाब सूखने लगा, क्योंकि जंगल में पानी नहीं बरसता था। धीरे-धीरे तालाब बिल्कुल सूख गया और सभी जानवर प्यास से व्याकुल होकर भटकने लगे।
परेशान होकर सभी जानवरों ने मिलकर एक सभा की और तब वन के मन्त्री भालू ने अपने राजा शेर को यह सुझाव दिया कि-, "महाराज! पास के गाँव में जाकर गाँव वालों से पानी के लिए मदद माँगी जाय। हो सकता है वे लोग हमारी समस्या समझें।" सभी जानवर गाँव के बाहर जाकर शान्त बैठ गये। पहले तो गाँव वालों ने जब इतने सारे जंगली जानवरों को देखा तो वे डरे। फिर गाँव वालों ने जब देखा कि जानवर उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहे हैं, तब धीरे-धीरे उनके पास गये। सभी जानवरों के प्रतिनिधि बनकर जानवरों के मन्त्री भालू ने गाँव के मुखिया से अपनी बात बतायी। मुखिया ने गाँव वालों के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा और कहा-, "यदि हम लोग इन सबको अपने गाँव में बने तालाब का पानी पीने के लिए उपलब्ध करा दें, तो इन सभी की जान बच सकती है।" गाँव वालों के साथ कुछ विचार-विमर्श किया। सभी लोगों ने मुखिया की बात मान ली और इस बात की सहमति तो दी, लेकिन इस शर्त के साथ कि कोई भी जंगली जानवर उनके बच्चों को या किसी भी ग्रामीण को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। इस तरह से मनुष्य और जानवरों में सुलह हो गयी। जानवर और ग्रामीण एक दूसरे की मददगार बन गये।

संस्कार संदेश-
धरती पर सभी प्राणियों को प्रेम, एकता, परोपकार और समता का भाव अपनाना चाहिए।

लेखिका-
साधना यादव(छात्रा), कक्षा-8
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ (सीतापुर)

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार सदेश दिनांक - 10.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 20/2024
बाल कहानी दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

उजाड़

"अहा! इतने लम्बे -चौड़े खेत। धन्य हो! हमारे पितरों ने कैसे कब इनका निर्माण किया होगा? जब धरती काटने या जमीन समतल करने की आजकल जैसी कोई मशीनरी उपलब्ध नहीं थीं।" कहते हुए मुकुल उपाध्याय अपने घर से लगे सीढ़ीदार खेतों को निहारे जा रहे थे। "अरे यार! तब गाँव में लोगों के बीच एकता, सहयोग, समर्पण व इस भूमि के प्रति आत्मिक लगाव था। लोग गाँव में ही मस्त रहकर खेतीबाड़ी पशुपालन करते। शुद्ध हवा पानी लेते खूब मेहनत करते और सामूहिक रूप से कार्य कर कठिन से कठिन कार्यों को पल में निपटा देते।" कहते हुए उसके साथ बैठे साथी सुनील ने गुड़ के साथ चाय का घूँट लेते हुए कहा। "सही कहा तुमने, अब जल्दी ही इन बंजर पड़े खेतों में छोटे ट्रेक्टर से जुताई कर फसलें उगायेंगे। फलदार पेड़ पौधे लगायेंगे।" "बिलकुल यार जैसे मकान बनाकर हमने उजड़ चुके अपने इस पैतृक गाँव को फिर से आबाद कर दिया है। है ना।" गरम-गरम चाय की चुस्कियों के साथ बहस जारी थी कि तभी तेज कदमों के साथ भुवन उधर आता हुआ दिखाई दिया। 'जै इष्ट देव भनेरी गोलू' कहते हुए उसने बताया कि- "शहरों व मैदानों में बसे लगभग सभी परिवार अब यहाँ गाँव में भी मकान बनाने जा रहे हैं। सुनकर सभी के चेहरों पर मुस्कराहट तैर गयी और नजरें आस्था के साथ अपने इष्ट देव मन्दिर की ओर लग गयीं। अस्सी से दो हजार के बीच का दौर था वह, जब नौकरी याफ्ता व समृद्ध लोगों ने सुविधाओं की दुहाई दे एक-एककर गाँव छोड़ना शुरू किया था। तराई- भावर क्षेत्र व शहरों में मकान बनाकर वहीं के होकर रहने लगे थे। शेष एक -दो गरीब परिवार भी निकटवर्ती सड़क से जुड़े कस्बों व बाजारों में चले गये और पूरा गाँव जन शून्य होकर उजाड़ हो चला था।

बीस पच्चीस सालों के इस दौर में अनेक बुजुर्ग चल बसे थे और एक नयी पीढ़ी भी जवान हो गयी थी। विडम्बना यह रही कि गाँव के कुल देवता (इष्टदेव) का पूजन करने लगभग हर परिवार साल-दो साल में गाँव आते और मन्दिर के निकट टैंट बना शीघ्र पूजा पाठ निपटाकर मैदानों को निकल जाते। मगर टूटे हुए मकान बंजर पड़े खेत व उजाड़ पड़ी इस धरती की टीस उन्हें अन्दर से बेधते रहती। अब अलग राज्य बन जाने से पहाड़ के लगभग हर गाँव सड़क से जुड़ने लगे थे, तभी कोरोना ने भी दस्तक दे दी। शहरी क्षेत्रों से लोग भाग-भागकर पहाड़ अपने घरों में आने लगे। शुद्ध आबोहवा, खानपान तथा स्वाभाविक दूरी के चलते यहाँ बहुत कम जनहानि हुई और लोगों की अपने स्थानीय इष्टदेवों के प्रति आस्था में भी इजाफा हुआ। वे इसे उनकी कृपा भी मानते। लोगों का मन अब पुन: गाँव की ओर दौड़ने लगा। गाँव तक काफी सुविधाएँ पहुँच चुकी थीं। समृद्ध परिवारों में से मुकुल व सुनील की फैमिली ने शीघ्र ही गाँव में अपने लिए नये मकान बना लिए और अन्यत्र बसे गाँव के लोगों से सम्पर्क कर चन्दा इकठ्ठा करते हुए भव्य इष्टदेव मन्दिर का निर्माण भी कर दिया। इस वर्ष लगभग प्रत्येक परिवार का अब नया घर बनने जा रहा था तथा इस बीच मन्दिर में पूजा आयोजन के लिए इकट्ठा हुए प्रत्येक व्यक्ति के आँखों में अब खुशी के आँसू सहज ही प्रकट भी हो रहे थे।

संस्कार सन्देश-

गाँव का जीवन सहज और प्राकृतिक होता है। यहाँ निरन्तर शुद्ध हवा और संस्कारों का संगम है।

लेखक-
दीवान सिंह कठायत (प्र०अ०)
रा० आ० प्रा० वि उडियारी, बेरीनाग, पिथौरागढ

संस्कार सदेश दिनांक - 12.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 21/2024
बाल कहानी दिन- सोमवार
मिशन शिक्षण संवाद

शरारती सीनू

सीनू और चन्दन दो बहुत अच्छे दोस्त थे। चन्दन थोड़ा शान्त और सरल स्वभाव का था, पर सीनू को कभी-कभी शरारत सूझती। वह किसी को भी अटपटे से झूठ बोलकर डरा देता और परेशान करता। चन्दन उसे हमेशा समझाता, लेकिन सीनू की झूठ बोलने की आदतें और बढ़ती जाती थी। लोगों की नजर में वह एक झूठा और शरारती बच्चा बनता जा रहा था। उसकी ऐसी शरारतों से चन्दन नाराज भी होता और दोस्त के नाते उसे समझाता भी कि-, "तुम बिना मतलब किसी को झूठ बोलकर क्यों सताते हो? किसी दिन इस आदत से तुम बड़ी मुश्किल में न पड़ जाओ।" पर चन्दन की बातों को सीनू हँसकर टाल देता।

एक दिन छत पर अपने कुछ दोस्तों के साथ सीनू और चन्दन भी खेल रहे थे। सीनू को फिर शरारत सूझी। उसने साथ खेल रहे चिन्टू को झूठ बोलकर उसे डराने की ठान ली। जब सभी बच्चे खेलने में मगन थे तो सीनू ने चिन्टू के कान में चुपचाप जाकर कहा-, " चिन्टू! उस दूसरी छत के नीचे तुम्हारे पापा खड़े तुम्हें बुला रहे हैं, बहुत गुस्से में भी हैं, चाहो तो नीचे देख लो!" आज खेलते-खेलते कुछ देर भी हो गयी थी तो चिन्टू को लगा कि सच में पापा नाराज होकर बुला रहे होंगे। वह छत से नीचे देखने लगा। जब कोई न दिखा, तो वह सीनू को "झूठा" कहकर फिर खेलने लगा, पर सीनू ने उसे पकड़ा और छत के किनारे ले जाकर बोला-, "बैठकर थोड़ा नीचे झुककर देख, अंकल वहीं खड़े हैं। मैंने देखा उनको, वह बहुत गुस्से में थे।" चिन्टू झुककर देखने लगा। छत की रेलिंग बहुत ऊँची न थी। अपने पापा को देखने की कोशिश करने लगा, तभी पीछे से सीनू ने बहुत डरावनी आवाज निकाली, चिन्टू मारे डर के छत से नीचे जा गिरा। सीनू जो चिन्टू को डरा रहा था, खुद डरकर चीखने लगा। सारे बच्चे इकट्ठा हो गये और नीचे गिरे चिन्टू को कुछ लोग उठाकर हॉस्पिटल लिये चले गये। चन्दन सीनू को रोते देखकर समझ गया कि इस घटना में उसी का हाथ है।सीनू इस घटना से बहुत डर गया और रोने लगा। सबने उसे चुप कराया। हॉस्पिटल में चिन्टू के एक पैर में डेढ़ महीने के लिए प्लास्टर लगाया गया। और भी चोटें आयी थी, उनके लिए दवाएँ दी गयी। जैसे ही चिन्टू घर आया, वह उसके घर पहुँचकर उससे और उसके परिवार से हाथ जोड़कर माफी माँगने लगा। सबकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तब चन्दन ने सबको बताया कि-, "चिन्टू को सीनू ने ही झूठ बोलकर डराया था, तभी वह छत से नीचे गिरा है। इस पर सभी लोग सन्न रह गये, क्योंकि अभी तक चिन्टू ने किसी को कुछ नहीं बताया था कि वह नीचे कैसे गिरा? लेकिन सीनू की आँखों में आँसू देखकर उसने कहा-, "पापा! सीनू को माफ कर दो! मुझे जो चोट लगनी थी, लग चुकी। अब उस पर नाराज़ होने से कोई फायदा नहीं।" सबने उस समझदार बच्चे की बात पर विचार किया। चिन्टू के पापा ने सीनू को समझाते हुए कहा-, "बेटा! इस बार तो माफ़ किया, लेकिन तुम ये वादा करो कि अब आगे से इस तरह की कोई भी शरारत नहीं करोगे, जिससे किसी को ऐसा कष्ट मिले। हँसी-मजाक करो, लेकिन इतना कि किसी को नुकसान न पहुँचे।" सीनू ने कान पकड़कर कहा 'जी अंकल' मैं आगे से कभी न झूठ बोलूँगा, न ही ऐसी कोई शैतानी करने की सोचूँगा।"

संस्कार संदेश-
हमें अनावश्यक झूठ नहीं बोलना चाहिए। किसी से ऐसा मजाक बिल्कुल नहीं करना चाहिए जिससे किसी को कष्ट पहुँचे।

लेखिका-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार सदेश दिनांक - 13.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 22/2024
बाल कहानी
दिन- मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद

ईमानदारी से बड़ा फल

एक सुभाकी नामक गाँव में शान्तनु और उसकी बूढ़ी काकी रहते थे। काकी बहुत ही समझदार थी और शान्तनु को सदैव सच्चाई और ईमानदारी का पाठ पढ़ाती रहती थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि शान्तनु जब थोड़ा बड़ा हुआ तो वह छोटा-मोटा काम करने लगा। एक दिन वह मेले में गया तो देखा कि रास्ते में एक बड़ा सा पैकेट पड़ा है-, "अरे! ये क्या? लगता है, किसी का गिर गया होगा। चलो पास ही एक घोषणा कर देता हूँ।" ऐसा सोचकर वह जहाँ माइक से घोषणाएँ हो रही थीं, उनके पास जाता है और कहता है-, "सुनिए! ये किसी का पैकेट गिर गया है। क्या आप एक घोषणा करा सकते हैं?"

"अरे.. हाँ.. हाँ.. क्यों नहीं! लाओ ये पैकेट मुझे दे दो और तुम जाओ, मैं जिसका होगा दे दूँगा।" शान्तनु वह पैकेट देकर आगे जैसे ही बढ़ता है, देखता है कि एक बूढ़े दादा जी रो रहे हैं। वह पूछता है कि-, "दादा जी.. दादा जी! क्या हुआ.. आप क्यों रो रहे हैं?" बूढ़े दादा जी बोले-, "आज मेरी पोती की शादी है और मैं अपनी गाय-भैंस बेचकर धन लेकर जा रहा था, लेकिन मुझे अचानक चक्कर आ गया और वह पोटली कहीं गिर गयी।" शान्तनु ने सोचा कि कहीं ये उसी पोटली की बात तो नहीं कर रहे, जो मुझे मेले में मिली थी। उसने कहा-, "आप एक मिनट रुकिए, मैं अभी आया।" वह दौड़कर घोषणा वाले व्यक्ति के पास जाता है और कहता है कि-, "अंकल! मेरी वह पोटली दे दीजिए।"

"कौन सी पोटली? मेरे पास कोई पोटली नहीं है।" शान्तनु को समझते देर नहीं लगी कि ये बेईमानी कर रहा है। उसने एक उपाय सोचा और कहा कि-, "सुनिए! मुझे उसी तरह की एक पोटली और मिली है, मैं तो देखना चाहता था कि दोनों एक सी हैं क्या?"

उस घोषणा वाले व्यक्ति को लालच आ गया और तुरन्त बोला-, "मुझे माफ करना! मैं भूल गया था। अभी दिखाता हूँ।" जैसे ही उसने वह पोटली दिखायी तो शान्तनु ने वह पोटली उस बूढ़े दादाजी को दे दी। उस बूढ़े दादा जी ने शान्तनु को उसकी सूझ-बूझ और ईमानदारी के लिए बहुत धन्यवाद और आशीर्वाद दिया। तभी एक बहुत बड़ा व्यापारी ये सब देख रहा रहा था। उसने तुरन्त शान्तनु को अपने व्यापार में शामिल कर लिया।

संस्कार संदेश-
सच! ईमानदारी से बड़ा कोई फल नहीं है।

लेखिका-
अंजनी अग्रवाल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सेमरुआ
सरसौल (कानपुर नगर)

मिशन शिक्षण संवाद

संस्कार सदेश

दिनांक - 15.02.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 23/2024

बाल कहानी

दिन- गुरुवार

फुटबॉल

एक गाँव में एक व्यापारी अपनी पत्नी और ग्यारह साल के पुत्र करन के साथ बहुत खुशी-खुशी रहता था। व्यापारी के कारोबार में दिन-रात तरक्की होती थी। करन इकलौती सन्तान होने के कारण दुलार में बिगड़ गया था। वह स्कूल नहीं जाता था। व्यापारी हर तरह से खुश होकर भी इस बात से चिन्तित रहता था कि मेरा बेटा कहीं अशिक्षित न रह जाये। इकलौती सन्तान होने के कारण करन को उसके माता-पिता बहुत प्यार करते थे। उसकी हर जरुरत पूरी करते, उसे जरा भी डाँटते नहीं थे। अधिक दुलार के कारण ही करन विद्यालय नहीं जाता था क्योंकि उसको पता था कि उसके माता-पिता उसको डाँटेंगे नहीं, सिर्फ समझायेंगे। वह रोज कहता कि-, "कल से रोज़ स्कूल जाऊँगा।" उसका ये कल कभी नहीं आता था। करन को फुटबॉल खेलना बहुत पसन्द था। करन जो भी खिलौने की इच्छा व्यक्त करता, उसके पास अच्छे-अच्छे खिलौने आ जाते। करन ने कई तरह के फुटबॉल अपने पिताजी से मँगवा लिये था। वह रोज नये-नये फुटबॉल लेकर मैदान की तरफ चला जाता था। जो भी उसे मिल जाता, उसके साथ खेलने लगता था। किसी दिन तो ऐसा भी होता था कि सब बच्चे स्कूल चले जाते थे, वह अकेला ही फुटबॉल खेलता रहता था।

किसी के समझाने का करन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वह किसी की नहीं सुनता था। एक दिन की बात है। सभी बच्चे स्कूल चले गये। गाँव में उसे कोई भी साथ खेलने के लिए नहीं मिला। करन का मन था कि आज वह कई लोगों के साथ फुटबॉल खेले, पर उसके सारे मित्र स्कूल जा चुके थे। करन पास के ही दूसरे गाँव में चला गया। वहाँ कुछ बच्चे बैठे हुए थे। करन ने फुटबॉल देखकर उन बच्चों से दोस्ती की और उनके साथ फुटबॉल खेलने लगा। करन मित्रों के साथ फुटबॉल खेल रहा था। खेलते-खेलते अचानक करन के पेट में दर्द होने लगा। करन खेल के स्थान से हटकर दूर जाकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। सभी मित्र करन की तरफ देखने लगे और करन को आवाज देते हुए बोले-, "क्या हुआ करन! तुम डर गये क्या, खेलोगे नहीं?" करन ने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि करन के पेट में बहुत जोर से दर्द हो रहा था। वह दर्द के मारे कुछ बोल न सका और चुपचाप पेड़ के नीचे बैठा रहा। उसके सभी मित्र फुटबॉल खेलने में मस्त हो गये। करन पेट दर्द से कराहता रहा। पेट दर्द तेज होने के कारण करन घर की तरफ चलने लगा। समय बहुत हो गया था। उधर स्कूल में छुट्टी भी हो गयी। सभी बच्चे स्कूल से लौट रहे थे। करन से दर्द सहन नहीं हुआ, तो वह सड़क किनारे ही बैठ गया और रोने लगा। तभी उसका एक मित्र जो विद्यालय से लौट रहा था, उसने करन की हालत देखी तो दौड़कर करन के पास आ गया। करन से पूछते हुए बोला-, "क्या हुआ मित्र! तुम यहाँ क्यों बैठे हो, कोई तकलीफ है क्या?" करन ने जवाब दिया कि-, "उसे बहुत जोर से पेट में दर्द हो रहा है। मित्र राज! मुझे घर ले चलो।" "ठीक है, मैं तुम्हें अपनी साइकिल पर बैठाकर तुम्हारे घर लिए चलता हूँ।" करन का मित्र राज साइकिल पर बैठाकर करन को उसके घर तक ले आया। करन के पिताजी ने जल्दी से उसे डॉक्टर को दिखाया। कुछ ही देर में वह दवाई खाकर ठीक हो गया। करन ने अपने मित्र राज का 'धन्यवाद' किया कि उसने समय से उसको घर पहुँचा दिया, जहाँ उसका इलाज उसके पिताजी ने कराया। राज ने करन के धन्यवाद का उत्तर देते हुए कहा-, "मित्र! मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रोज स्कूल चलो। इस धन्यवाद की कोई जरुरत नहीं है। यह तो मेरा फर्ज था। रही बात फुटबॉल खेलने की, वह तुम स्कूल में खेल के घण्टे में भी खेल सकते हो। मैं भी तुम्हारे साथ खेलूँगा। पर तुम प्रतिदिन स्कूल चलो मेरे साथ।" करन ने प्रतिदिन विद्यालय समय से जाने के लिये हामी भर ली। करन के इस फैसले से सभी लोग बहुत खुश हुए। सभी को खुश देखकर करण को भी खुशी हुई क्योंकि आज करन को बहुत पश्चाताप हुआ कि वह उन दोस्तों के साथ खेल रहा था, जिन दोस्तों को खेल के अलावा कुछ और नहीं सूझता था। करन ने तय किया कि अब वह अपने स्कूल समय पर जायेगा और अपने अच्छे दोस्तों के साथ रहेगा। उन्हीं के साथ फुटबॉल खेलेगा।

संस्कार सन्देश-

अच्छा मित्र हमेशा अच्छी राह दिखाता है।

लेखिका-

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com/shikshansamvad

@shikshansamvad.com

9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 16.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 24/2024
बाल कहानी दिन - शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

बगुला और सर्प

एक लड़का था, जिसका नाम राहुल था। वह बहुत ही नेक और ईमानदार और दयालु था। वह सदा पढ़ाई में आगे रहता था। वह सभी गुरुजनों, अपने माता-पिता और बड़ों का सम्मान करता था, क्योंकि उसे बचपन से ही माँ-बाप और दादा-दादी से अच्छे संस्कार मिलें थे। दादा-दादी उसे बचपन से ही वीर पुरुषों और धार्मिक ग्रन्थों की कहानियाँ सुनाया करते थे। इससे गाँव के सभी लोग उससे बहुत प्रेम करते थे और उसकी पीठ पीछे सराहना करते थे।

राहुल एक दिन कहीं बाहर घूमने जा रहा था। घूमते-घूमते वह दोस्तों के साथ खेतों की ओर निकल गया। तभी उसने देखा कि पास में बने चैक डैम के किनारे एक बगुला बैठा हुआ एक ओर टकटकी लगाए देख रहा था। राहुल ने रुककर ध्यान से देखा तो पता चला कि बगुला एक सर्प की ओर देख रहा है। सर्प भी फन उठाए बगुले की ओर देख रहा था। लेकिन न तो सर्प भाग पा रहा था और न ही बगुला सर्प को पकड़ने की हिम्मत जुटा पा रहा था। राहुल अपने दोस्तों के साथ बहुत देर तक देखता रहा। जब अधिक देर हो गयी, तब राहुल ने अपने दोस्त मनोहर से कहा कि-, "मनोहर! बहुत देर हो गयी है। हमें बगुला को भगाकर सर्प की जान बचाना चाहिए, अन्यथा बगुला सर्प को मारकर खा जायेगा।" मनोहर बोला-, "सर्प, मछली जीव-जन्तु तो बगुले का भोजन है। हमें किसी का भोजन नहीं छीनना चाहिए।" राहुल ने जबाव दिया कि-, "अगर सर्प के भाग्य में मौत लिखी होती तो यह कभी का बगुले का शिकार हो गया होता। यह सर्प हमारे आने तक जीवित नहीं रहता। हमें इसको बचाना होगा।" ऐसा कहकर राहुल ने पास में लगी बेसरम से एक डंडा तोड़ा और बगुले को वहाँ से भगाया। बगुले के उड़ते ही सर्प तुरन्त वहाँ से हट गया और जल्दी से एक ओर जाकर छिप गया। बगुले ने वहाँ आने की बहुत कोशिश की, लेकिन राहुल ने उसे वहाँ आने नहीं दिया। कुछ देर बाद सर्प वहीं पास में एक बिल में घुस गया। अब राहुल निश्चिंत हो गया और दोस्तों के साथ खेतों की ओर चला गया। वहाँ जाकर उसने हरी-हरी मटर की फलियाँ तोड़ी और उन्हें ईंधन इकठ्ठा कर आग पर भूना। आग पर भूनने के बाद सभी दोस्तों सहित राहुल ने मटर की भुनी हुई फलियाँ खायीं और फिर शाम होने के पहले ही घर लौट आया। जब राहुल ने सर्प और बगुले का वृतान्त सभी को सुनाया तो सभी खुश हुए और साथ ही उसे ऐसे मामलों में सावधानी बरतने को कहा।

संस्कार सन्देश-

हमें जीवों पर दया करनी चाहिए, साथ ही सावधानी भी वरतनी चाहिए।

लेखक-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad
@shikshansamvad.com
9458278429

संस्कार सदेश दिनांक - 17.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 25/2024
बाल कहानी दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

करनी का फल

एक गाँव में लीलावती नाम की औरत रहती थी। लीलावती के पास एक बकरी थी। वह जब भी उसे चराने जाती तो किसी के भी खेत में चरने के लिए छोड़ देती थी। एक दिन लीलावती ने गाँव के ही पण्डित दीनदयाल जी के खेत में अपनी बकरी छोड़ दी। जब पण्डितजी को पता चला कि लीलावती की बकरी उनका खेत चर गयी तो उन्हें बहुत गुस्सा आया। पण्डितजी ने लीलावती को डाँटा, पर लीलावती ने कहा कि- "मेरे पास बकरी को बाँधने के लिए रस्सी नहीं है, मैं क्या करूँ?" पण्डितजी ने लीलावती को बकरी बाँधने के लिए रस्सी दे दी। परन्तु दो-तीन दिन बाद फिर वही हुआ। इस बार पण्डितजी ने पंचायत बुलायी। पंचायत में उन्होंने बताया कि- "लीलावती की बकरी बार-बार मेरी फसल खाकर मेरा नुकसान कर रही है। मैंने लीलावती के कहने पर उसे बकरी बाँधने के लिए रस्सी भी दे दी थी, फिर भी वह अपनी बकरी नहीं बाँधती है।"

इतना सुनते ही लीलावती चटककर बोली-, "वो सड़ी हुई रस्सी..वो तो अगले ही दिन टूट गयी थी। मेरी बकरी चौबीस घन्टे तो खूँटे से नहीं बँधी रह सकती। पण्डितजी अपने खेत की स्वयं रखवाली करें।" इतना कहकर लीलावती ने बकरी बाँधने से साफ इन्कार कर दिया। पंचायत ने भी फैसला सुना दिया कि आप अपने खेत की स्वयं रखवाली करें।" पण्डितजी निराश होकर घर लौट आये। उधर फसलों में माऊँ और कीड़ों का प्रकोप अधिक हो चला था, जिसके कारण फसलें खराब हो रही थीं। पण्डितजी ने अपनी फसल में मात्रा से अधिक कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करवा दिया। लीलावती की बकरी ने जब इस बार पण्डितजी की फसल खायी तो वह बीमार रहने लगी। लीलावती ने उसे ठीक करने के लिए डॉक्टरों को दिखाया और महीने भर दवा खिलायी। बकरी के इलाज में लीलावती का हजारों रुपए का खर्चा हो गया, किन्तु बकरी ठीक न हुई और एक दिन भगवान को प्यारी हो गयी। अब इस बार लीलावती ने पंचायत बुलायी तो पण्डितजी ने भी कह दिया कि- "मैंने तो अपनी फसल की रखवाली की, लेकिन लीलावती ने अपनी बकरी की रखवाली नहीं की, जिसके कारण वह मर गयी।" पंचायत ने पण्डितजी को निर्दोष करार दे दिया और लीलावती सिर पटककर यह गयी। कहते हैं कि- "जैसी करनी, वैसी भरनी।"

संस्कार सन्देश-

जैसा हम दूसरों के साथ करते हैं, वैसा ही एक दिन हमारे साथ होता है।

लेखक-
राहुल शर्मा (स०अ०)
क० स्कूल धौर्रा, मऊरानीपुर, झाँसी

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad
@shikshansamvad.com
9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 19.02.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 26/2024

बाल कहानी दिन- सोमवार

मिशन शिक्षण संवाद

लिली और गौरैया

एक बार की बात है। लिली नाम की एक छोटी लड़की थी, जिसे पक्षियों से बहुत प्यार था। वह अपना खाली समय पक्षियों के बारे में किताबें पढ़ने, चित्र देखने और अपने घर के पीछे बने बगीचे में बिताती थी। वह अक्सर यह सोंचकर दुःखी हो जाती कि आज के समय में लगातार काटे जा रहे जंगलों से सभी पशु-पक्षी अपना आश्रय खोते जा रहे हैं।

लिली के भाई मगन को चिड़ियों को ढेला मारकर उड़ाने में मज़ा आता। कभी अगर किसी चिड़िया का घोंसला दिख जाये, तो मगन उनके अण्डे छूने की कोशिश करता, जबकि लिली उसे ऐसा करने से मना करती और समझाती थी कि-, "उसने पुस्तकों में पढ़ा है कि अगर पक्षियों के घोंसले में रखे अण्डे किसी ने छू लिये, तो फिर इसके बाद चिड़िया उनको सेती नहीं है। हमारी ही तरह पशु-पक्षियों में भी संवेदनशीलता होती है। वे सब भी स्नेह व प्यार की मौन भाषा को समझते हैं। हमें अनावश्यक उन सभी को परेशान नहीं करना चाहिए, पर मगन नहीं सुनता था। एक दिन जब लिली बगीचे में खेल रही थी, तो उसने देखा कि एक गौरैया किसी तरह घायल होकर नीचे पड़ी दर्द से कराह रही थी। लिली ने सोचा कि उसे गौरैया की मदद करनी है, इसलिए वह सावधानी से उसके पास गयी और धीरे से उसे अपने हाथों में उठाया और घर ले आयी। माँ से कहकर उस गौरैया को डॉक्टर के पास ले गयी। जहाँ उस गौरैया के लिए अच्छी दवाएँ दी गयीं। बहुत जल्दी ही वह गौरैया ठीक होने लगी थी। लिली ने सोचा था, कि ठीक होते ही वह वापस उड़ जाएगी, पर ऐसा नहीं हुआ। गौरैया पूरी तरह स्वस्थ होकर भी लिली के आस-पास ही घूमती रहती। शायद उसे जंगल से अधिक लिली का घर सुरक्षित लगने लगा था। लिली के प्रति गौरैया का लगाव देखकर मगन को भी समझ में आ चुका था कि ये भोले पक्षी भी प्रेम की भाषा अच्छी तरह समझते हैं। अब उसने भी तय किया कि कभी किसी पशु-पक्षी को नहीं सतायेगा।

संस्कार संदेश-

पशु-पक्षी भी साथ प्यार और स्नेह की भाषा समझते हैं। हमें उन सभी को परेशान नहीं करना चाहिए।

लेखिका-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 20.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 27/2024
बाल कहानी दिन- मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद

चॉकलेट

रोहन अपनी नयी साइकिल से बाजार जा रहा था। उसे घर का कुछ सामान लाना था। माँ ने एक लम्बी सूची दी थी। रोहन बहुत खुश था, क्योंकि बहुत दिनों बाद रोहन को दस रुपये चॉकलेट खाने को मिले थे। रोहन ने देखा कि रास्ते में एक बुजुर्ग व्यक्ति धीरे-धीरे पैदल चलते हुए लड़खड़ा रहे हैं। रोहन ने अपनी साइकिल रोक कर बुजुर्ग व्यक्ति से पूछा-, "दादा जी! आप कहाँ जा रहे हैं? आपकी तबियत ठीक नहीं लग रही है!"

वे बोले, "हाँ, बेटा! मैं बहुत दिनों से बीमार हूँ। डॉक्टर के पास जा रहा हूँ। कई घण्टे पहले से घर से निकला हूँ, पर मुझे चक्कर आ रहा है। इसलिए रुक-रुककर जा रहा हूँ।" रोहन ने अपनी साइकिल पर दादाजी को बैठाने की कोशिश की, परन्तु असफल रहा। इसलिए रोहन ने दादा जी को एक पेड़ के नीचे बैठा दिया। वह थोड़ी दूर जाकर एक ऑटो रिक्शा बुला लाया। लोगों की मदद से रोहन ने दादा जी को ऑटो रिक्शा में बैठा दिया। दादा जी ने रोहन को खूब दुआ दी। उसके बाद रोहन बाज़ार से सामान ले आया। माँ ने सामान देख कर कहा-, "सामान तो तुम ठीक लाये हो, पर तुम्हारी चॉकलेट कहाँ है?" रोहन ने माँ के सवाल पर रास्ते का सारा किस्सा बता दिया। माँ को रोहन पर बहुत गर्व महसूस हुआ। माँ ने रोहन को गले से लगाकर नेक काम की शाबाशी दी। वह रोहन को दोबारा दस रुपये देते हुए बोली-, "जाओ! एक चॉकलेट ले आओ। हम दोनों लोग मिलकर खाते हैं।"

रोहन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह बहुत खुश हुआ। उसने माँ को प्यार से धन्यवाद कहा और चॉकलेट लेने चला गया।

संस्कार सन्देश-
हालात कैसे भी हों, हमें सदैव लोगों की मदद करनी चाहिए।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार संदेश दिनांक - 21-02-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 28/2024
बाल कहानी दिन - बुधवार
मिशन शिक्षण संवाद

ललक

किसी गाँव में मोहन अपनी पत्नी राधा और दो बच्चों करन और मोहनी के साथ रहता था। करन कक्षा तीन में पढ़ता था, जबकि मोहनी अभी छ: वर्ष की नहीं हुई थी। मोहनी के मन में पढ़ने की बहुत ललक थी। वह कभी-कभी अपने भाई करन के साथ स्कूल जाती। वह प्रार्थना स्थल पर प्रार्थना और पी०टी० करती। कक्षा में वह मन लगाकर पढ़ती। कुछ ही दिनों में वह बहुत होशियार हो गयी थी। मोहनी रोज अपनी माँ से कहती कि-, "माँ! आप मुझे रोज भाई के साथ स्कूल क्यों नहीं जाने देती? मैं बहुत मन लगाकर पढ़ती हूँ और सभी अध्यापक मेरी बहुत प्रसंशा करते हैं। वे कहते हैं कि तुम रोज स्कूल आया करो। अब तुम छ: वर्ष की होने वाली हो। अगले सत्र से स्कूल में तुम्हारा नाम लिख जायेगा। माँ! मुझे रोज स्कूल जाने दिया करो।"

मोहनी की बातें सुनकर राधा कहती कि-, "तुम्हें रोज स्कूल जाकर क्या करना है? मैं घर पर अकेली रहती हूँ। मेरे पास रहकर घर का काम सीखा करो। बेटियों को घर का सभी काम सीखना चाहिए।"

मोहनी ने तुरन्त जबाब दिया-, "माँ! आप चिन्ता मत करो! मैं पढ़ाई भी करूँगी और एक अच्छी बेटी की तरह घर का सारा काम भी सीखूँगी और करूँगी भी।"

माँ उसकी प्यार भरी बातें सुनकर मना नहीं कर सकी और बोली-, "ठीक है। मैं तुम्हें कल से रोज स्कूल भेजूँगी, पर ध्यान रखना, घर का काम भी...।" सुनते ही मोहनी प्रेम से माँ के गले लिपटकर बोली-, "मेरी प्यारी माँ! मैं आपको कभी भी शिकायत का मौका नहीं दूँगी।" यह सुनते ही माँ खुश हो गयी। मोहन जो छिपकर माँ-बेटी की प्यार-भरी बातें सुन रहा था, तुरन्त सामने आ गया और बोला-, "माँ-बेटी में आज क्या बातें हो रही थी?" पापा को देखते ही मोहनी माँ को छोड़कर पापा के पास जाकर बोली-, "पापा..पापा! मैं कल से रोज स्कूल जाऊँगी।" पापा ने उसे गोद में उठाकर प्रेम से कहा कि-, "हाँ, मेरी बच्ची! आप जरुर रोज स्कूल जाओगी। अब तुम छ: वर्ष की होने वाली हो। मैं इस वर्ष तुम्हारा नाम स्कूल में लिखवा दूँगा। मेरी बच्ची तो बहुत होशियार है।" मोहनी खुशी से 'हूँ.ऊँ.ऊँ' कहते पापा से लिपट गयी और बोली-, "माँ! देखो, मेरे पापा कितने अच्छे हैं। मैं पढ़ूँगी भी और घर का काम भी सीखूँगी। " पापा ने कहा-, "अभी तुम्हारी उम्र पढ़ने की है, न कि घर का काम करने की। थोड़ा और बड़ी होना, फिर घर का काम सीखना।" पापा की बात सुनकर मोहनी बोली-, "नहीं पापा! माँ घर का काम करके थक जाती है। मैं माँ के साथ घर के काम में हाथ बटाऊँगी तो माँ खुश रहेगी और बीमार भी नहीं पड़ेगी।"

यह सुनकर मोहन बोला-, "तू तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें करती हैं। मेरी बेटी तो बहुत बड़ी हो गयी है। ठीक है, जो तुझे अच्छा लगे, करना, लेकिन पढ़ना अभी जरुरी है।" 'ठीक है पापा' कहती हुई मोहनी बाहर खेलने चली गयी। मोहनी के जाने के बाद मोहन राधा से बोला-, "हमारे बच्चे अभी से कितने समझदार हैं। मोहनी के मन में पढ़ने की हार्दिक इच्छा है। हमें उसे दबाना नहीं चाहिए। कई लोग अपनी बच्चियों को स्कूल नहीं भेजते और न ही उनकी पढ़ाई और संस्कारों पर ध्यान देते हैं, ऐसे में बच्चे पढ़ाई से दूर हो अज्ञानता का जीवन व्यतीत करते हैं और आगे चलकर यही जीवन उनके साथ खिलवाड़ करता है। यही बच्चे आगे चलकर अपने माँ-बाप को दोषी ठहराते हैं।"

"ठीक कहते हो तुम! मैं तो सोचती थी कि बेटी को पढ़ाकर क्या करना है? एक दिन घर का काम ही तो करना ही पड़ेगा। परन्तु अब हमारी समझ में आया कि पढ़ना श्रेष्ठ जीवन जीने का सुन्दर तरीका है। हमें इसे उनसे नहीं छीनना चाहिए। पता नहीं, कब, कौन बच्चा पढ़-लिखकर क्या बन जाये?" राधा की बात सुनकर मोहन बोला-, "राधे! तुम बिल्कुल सही कहती हो। हमें न केवल अपने बच्चों को पढ़ाना चाहिए, बल्कि उन लोगों को भी समझाना चाहिए जो अपने बच्चों को पढ़ाने में संकोच और लापरवाही करते हैं। एक समझदार व्यक्ति का यही कर्तव्य है।"

संस्कार संदेश

जो माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं, वे उनके शत्रु होते हैं।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी प्रा० वि०- बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 22-02-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 29/2024
बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार
मिशन शिक्षण संवाद

शेर की उदारता

एक जंगल में दो मोर रहते थे। उनकी आवाज बहुत ही सुरीली और नृत्य बहुत ही मनमोहक था। वे दोनों मोर राजा सिंह की सभा में रोज शाम को जाते और समस्त जानवरों की उपस्थिति में गायन और नृत्य करते। एक मोर गीत गाता और दूसरा मोर नृत्य करता। मेंढ़क तबले पर थाप देता और बन्दर मृदंग बजाता। गिलहरी सारंगी बजाती और लोमड़ी वीणा के तारों में रागिनी छेड़ती। इस प्रकार सभी जानवर और पक्षी देर रात तक गायन और नृत्य-संगीत का आनन्द लेते।

इस तरह वर्ष बीतते गये। जंगल के राजा शेर के यहाँ शेरनी ने युवराज को जन्म दिया। चारों ओर जंगल में मंगल हो गया। पूरा जंगल शादी के मण्डप की तरह सजा हुआ था। हर रोज की तरह आज भी जंगल में शेर के दरबार में गायन-नृत्य-संगीत का आयोजन चल रहा था। सभी रात-भर राजा शेर के यहाँ भोज तथा गीत-संगीत और नृत्य का भरपूर मजा लेते रहे और खुशियाँ मनाते रहे।

जंगल की महारानी शेरनी भी राजा शेर के साथ दरबार में बैठी हुई गीत-संगीत और नृत्य में झूमती रही। उसे अपने सुकुमार, कोमल और नवजात बेटे का ध्यान ही नहीं आया। जब सभी को पुरस्कृत किया जा चुका और भेंटें दी जा चुकीं, तभी एकाएक उसे ध्यान आया कि मैं तो जाने कब से अपने बेटे को अकेली छोड़ आयी थी। किसी को बता भी नहीं आयी थी। वह तुरन्त भागी और वहाँ युवराज को न पाकर भयभीत और आशंकित हो गयी। उसने आकर सभी में शेर को सारी बात बतायी। सिंह ने सभी को रुकने के लिए कहा और मन्त्री चीते से पूछा कि-, "आज सभा में कौन नहीं आया है? मुझे इसकी जानकारी दी जाये।"

चीते ने जब पता लगाया तो मालूम हुआ कि आज गीदड़ थोड़ी देर के बाद चारों ओर घूमकर चला गया था और फिर नहीं आया। राजा ने गीदड़ को पकड़कर लाने को कहा। गीदड़ के आने पर शेर ने उसे उल्टा टाँग दिया और पूछा कि-, "युवराज कहाँ है?" गीदड़ घबरा गया और रोने लगा। शेर ने कहा कि-, "इसके शरीर से गर्म सलाखें दाग दी जायें। युवराज को तो मैं ढूँढ़ लूँगा।" गीदड़ तुरन्त बोला कि-, "युवराज को पडोसी जंगल का राजा ले गया और इस कार्य में मैंने उसकी मदद की थी।"

"लेकिन क्यों?"

"क्योंकि एक बार आपने मेरे पुत्र को पीटने की सजा दी थी, जबकि उसकी उतनी बड़ी गलती नहीं थी।" गीदड़ की बात सुनकर शेर ने उसे पेड़ से नीचे उतरवाया और कहा कि-, "मैं मानता हूँ कि मैंने आपके पुत्र को सजा दी थी, लेकिन मैं क्या करता, उसके पक्ष में कोई सबूत नहीं था, इसलिए मजबूरन मुझे ऐसा करना पड़ा।"

"तो मजबूरी में आप किसी को भी मार देंगे?"

"खैर, जो हो गया, सो हो गया। अब हम भविष्य में इसका ध्यान रखेंगे। अब हमें ये सोचना है कि हमारा पुत्र कैसे वापस आ जाये?"

"उसकी चिन्ता आप मत कीजिए! आपका पुत्र मेरे अधीन है। उसे मैं लेकर आऊँगा।" यह कहकर गीदड़ तुरन्त तेज गति से गया। सभी आश्चर्यचकित हुए। अगले ही पल गीदड़ युवराज को लिए आ गया। गीदड़ के इस कार्य पर सभी ने तालियाँ बतायीं। गीदड़ ने कहा कि-, "देख लीजिए राजन्! ये आपका पुत्र सकुशल है। इसे कोई भी पडोसी जंगल का राजा नहीं ले गया था। मैं केवल ये चाहता था कि आपको भी पुत्र की पीड़ा का अनुभव हो, ताकि भविष्य में दूसरे के पुत्र आपको अपने समान दिखाई दें।"

राजा ने पुत्र को देखा, जो शेरनी की गोद में सकुशल था। राजा ने गीदड़ को और उसके पुत्र को अभयदान दिया तथा अपना सलाहकार नियुक्त किया। गीदड़ अपने-आप को बहुत सौभाग्यशाली समझ रहा था। सभी जानवर और पक्षी उसके भाग्य और राजा की उदारता की सराहना करते हुए तालियाँ बजा रहे थे।

संस्कार संदेश

हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे हमारा परिवार संकट में आ जाये।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी प्रा० वि०- बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 23.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभा – 30/2024
बाल कहानी दिन - शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

स्वच्छता

एक दिन की बात है। विद्यालय की छुट्टी होने के बाद बच्चे विद्यालय के बाहर लगे चाट के ठेले पर चाट-समोसा खाने लगे। दूसरे दिन जब विद्यालय खुला तो कक्षा पाँच की छात्रा मुस्कान विद्यालय नहीं आयी। जब शिक्षिका ने अन्य बच्चों से मुस्कान के बारे में पूछा तो पता चला कि वह बीमार है। रात में उसे उल्टी व दस्त हो रहे थे। इसका कारण जानने के लिए शिक्षिका मुस्कान के घर चली गयी, जो विद्यालय के समीप ही था। वहाँ जाकर पता चला कि मुस्कान ने कल शाम को विद्यालय से घर जाते समय चाट-समोसे खाये थे। उसके बाद से ही उसकी तबीयत खराब हो गयी। शिक्षिका शाम को छुट्टी के समय उसी चाट के ठेले के पास रूकी। वहाँ उसने देखा कि ठेले पर मक्खियाँ भिन्न-भिन्ना रही हैं और वहाँ आसपास गन्दगी भी है।

दूसरे ही दिन शिक्षिका ने विद्यालय में सभी बच्चों को प्रार्थना-सभा के समय ही साफ-सफाई के बारे में समझाया। और बताया कि- "खुले में रखी हुए खाने-पीने की वस्तुओं को नहीं खाना चाहिए। गन्दी जगह एवं जिस खाने पर मक्खियाँ बैठी हों, वह भी नहीं खाना चाहिए। खाने से पहले अपने हाथों को अवश्य धोना चाहिए। इसके बाद उन्होंने हाथ धोने के तरीके को भी कविता के माध्यम से बताया कि कैसे हमें अपने हाथों की सफाई करनी चाहिए।

संस्कार सन्देश-

बार-बार हाथों को धोने से होती दूर
बीमारी। रखो साफ -सफाई का ध्यान
यही सबसे बड़ी है हमारी जिम्मेदारी।।

लेखिका-
रचना तिवारी (प्रधानाध्यापिका)
प्रा० वि० ढिमरपुरा पुनावली-कलां, झाँसी

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार सदेश दिनांक - 26.02.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 31/2024

बाल कहानी दिन- सोमवार

मिशन शिक्षण संवाद

मिनी का लन्च

एक मिनी नाम की लड़की थी, जो अपनी चीजें किसी के साथ शेयर करना पसन्द नहीं करती थी। उसे दोस्तों के साथ मिलना-जुलना, खेलना या बातें करना पसन्द नहीं था। इसलिए स्कूल या घर में उसके कोई भी बहुत अच्छे दोस्त नहीं थे। एक दिन अपने स्कूल में लन्च टाइम में लन्च करने जा रही थी, तो टिफिन खोलते समय ही मिनी का टिफिन बॉक्स नीचे गिर गया और सारा खाना जमीन पर बिखर गया। मिनी को बहुत तेज भूख लगी थी, लेकिन उसका सारा लन्च नीचे गिर चुका था।

वह बहुत दुःखी हुई, पर कर भी क्या सकती थी! क्लास के सभी बच्चे मिल-जुलकर लन्च कर रहे थे। मिनी ने देखा तो सभी बच्चे उसकी तरफ देख रहे थे। उसकी बेन्च पर बैठी हुई रोली ने मिनी के आगे अपना टिफिन बढ़ाया। चूँकि मिनी को किसी से घुलना-मिलना पसन्द नहीं था, इसलिए मिनी ने खाने से मना कर दिया। पर रोली ने फिर कहा, " प्लीज मिनी, मेरे टिफिन से लन्च ले लो, वरना भूखी रह जाओगी।" मिनी ने झिझकते हुए खाना शुरू कर दिया। रोली के टिफिन में दो परौंठे रखे थे, एक-एक दोनों ने खाया। मिनी रोज एक सेब लेकर आती थी, मिनी ने भी आधा सेब रोली को दिया और आधा स्वयं खाया। आज वो एक परौंठा और आधा सेब दोनों को प्रतिदिन से ज्यादा स्वादिष्ट लगा। मिनी और रोली की अच्छी दोस्ती हो गयी। फिर तो रोली ने अपने बाकी दोस्तों से भी मिनी की दोस्ती करवायी। मिनी को भी सभी के साथ बातें करके बहुत अच्छा लगा। वह सोच रही थी कि वह तो इन लोगों के साथ तो वह बात करना पसन्द नहीं करती थी, तब भी रोली ने उसकी मदद की। अब मिनी की समझ में आ गया था कि अपने आस-पास के लोगों की मदद करनी चाहिए तभी कठिन समय में आवश्यकता पड़ने पर हमें भी उनसे मदद मिलती है।

संस्कार संदेश-

अपने आस-पास के लोगों से मिल-जुलकर रहना चाहिए और उनकी सहायता करनी चाहिए।

लेखिका-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

http://missionshikshansamvad.com
https://www.facebook.com/shikshansamvad
@shikshansamvad.com
9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 27.02.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 32/2024
बाल कहानी दिन- मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद

पार्टी

आज मोनू का जन्मदिन है, इसलिए वह बहुत खुश है। मोनू ने जन्म-दिन की खुशियों को अच्छे से मनाने के लिए अपने माता-पिता से पार्टी करने की इजाजत माँगी। मोनू के माता-पिता ने खुशी जाहिर करते हुए 'हाँ' कह दिया। माँ बोली-, "बेटा! जल्दी से अब तैयार हो जाओ और स्कूल जाओ, वरना देर हो जायेगी।" मोनू ने कहा-, "माँ! रोज तो स्कूल जाता हूँ। आज जन्मदिन है मेरा, आज नहीं जाऊँगा। शाम को पार्टी है, इसलिए सभी दोस्तों को अपने जन्म-दिन पर आने का निमन्त्रण देना है।"

"ठीक है! न जाओ, नाश्ता तो कर लो।"

मोनू हाथ धोकर नाश्ता करने लगा। माँ ने फिर मुस्कुराते हुए कहा-, "बेटा! तुम दोस्तों को निमन्त्रण देने स्कूल जाओगे कि उनके स्कूल से वापस आने का इन्तजार करोगे, क्योंकि तुम्हीं अक्सर कहते हो कि मेरे सभी दोस्त प्रतिदिन समय से स्कूल जाते हैं और ये बताओ कि आज के दिन अपने गुरूजनों का आशीर्वाद कब लोगे? वैसे तो तुम हमेशा कहते हो कि मैं अपने सभी गुरुजी को बहुत मानता हूँ, तो इस खास दिन में क्या तुम उनसे आशीर्वाद नहीं लोगे?"

मोनू अब विवश हो गया। उसको माँ की बातें समझ में आ गयीं। मोनू नाश्ता करके स्कूल के लिए तैयार होने लगा। माँ मुस्करायी और गले से लगाकर आशीर्वाद दिया। मोनू खुशी-खुशी स्कूल चल दिया।

संस्कार सन्देश-
खुशी हो या गम।
स्कूल जायेंगे हम।।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार संदेश दिनांक - 28-02-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 33/2024

बाल कहानी दिन - बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

पहचान

एक बार मुकेश अपने दोस्तों के साथ रोज की तरह स्कूल गया। उस स्कूल में राहुल नाम का लड़का नया-नया आया था। सभी ने उसकी ओर अपना मित्र बनाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन उसने किसी की मित्रता स्वीकार नहीं की। उसे स्वयं पर बहुत ही अहंकार था। सभी उसके इस व्यवहार से अचम्भित थे। वह किसी से बात भी नहीं करता था। वह पढ़ने में होशियार था। कक्षा में अध्यापक जो भी पढ़ाते, वह तुरन्त समझ जाता था। अध्यापकों के द्वारा विषय से सम्बन्धित प्रश्न पूछने पर वह तुरन्त सबके उत्तर दे देता था।
एक दिन बच्चों द्वारा बताए जाने पर कक्षा-अध्यापक ने राहुल से पूछा कि-, "क्या बात है, क्या तुम्हें यहाँ के बच्चे अच्छे नहीं लगते हैं?"

राहुल ने कहा कि-, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मैं तो किसी अच्छे मित्र की तलाश में हूँ। मेरे माता-पिता ने कहा था कि मित्रता हमेशा अच्छे लोगों और बराबरी वालों के साथ करनी चाहिए, जो सदा तुम्हारे काम आये।"
अध्यापक राहुल की बात सुनकर बहुत खुश हुए और बोले कि-, "जानते हो राहुल! सभी बच्चे तुम्हें क्या समझते है? वे तुम्हारे इस प्रकार के वर्ताव को देखकर तुम्हें अहंकारी समझते हैं। वे कहते हैं कि राहुल को होशियार होने के कारण बहुत घमण्ड है।"
"लेकिन मैं घमण्डी नहीं हूँ सर! मैं तो सिर्फ उन्हें परख रहा हूँ।"
"ये तो मैं भी जानता हूँ राहुल! लेकिन परखने का ये तरीका गलत है। तुम्हें सबके साथ उठना-बैठना चाहिए। सबके साथ पढ़ना-खेलना चाहिए। सबके साथ रहते हुए ही तुम अच्छे मित्रों की पहचान कर सकते हो।"
"सर! ये तो मैंने सोचा भी नहीं था। आज से मैं सभी के साथ पढूँगा, खेलूँगा और सबसे बातें करूँगा।" राहुल की बात सुनकर कक्षा-अध्यापक बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सभी बच्चों से कहा कि, "आज से राहुल तुम सबके साथ पढ़ेगा, खेलेगा और बातें करेगा।" यह सुनकर सभी बच्चे बहुत प्रसन्न हुए।

संस्कार सन्देश

हमें सभी के साथ मिलकर रहना चाहिए, तभी हम अच्छे और बुरे में पहचान कर पायेंगे।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी

प्रा वि बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 29-02-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 34/2024
बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार
मिशन शिक्षण संवाद

सबक

एक बार दो परियाँ एक राजकुमार के साथ कहीं बाहर जा रही थीं। एक परी का नाम सोनम और दूसरी का नाम शबनम था। दोनों बहुत ही सुन्दर और बुद्धिमान थीं। राजकुमार का नाम अभिषेक था। सोनम परी की शादी राजकुमार से तय हो चुकी थी। वे तीनों जब घूमने एक घने जंगल में जा रहे थे, तो उसी जंगल में एक जादूगरनी रहती थी। उसने जैसे ही राजकुमार को देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी। उसने मौका मिलने पर राजकुमार से कहा कि-, "राजकुमार! तुम इन दोनों पारियों के साथ कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार ने उत्तर दिया-, "ये दोनों सोनम और शबनम परी हैं। सोनम परी मेरी होने वाली पत्नी है। मैं इनके साथ घूमने जा रहा हूँ। आप कौन हैं?" राजकुमार के इस प्रकार पूछने पर जादूगरनी ने जबाब दिया-, "मैं एक जादूगरनी हूँ। इस जंगल में रहकर तपस्या और मन्त्र जाप करती हूँ, ताकि मैं अपनी सिद्धियाँ बढ़ा सकूँ।"

राजकुमार ने कहा कि-, "नहीं, मैं अपने वचन को नहीं तोड़ सकता। मेरा विवाह उससे होना निश्चित है।" जादूगरनी ने कहा कि-, "अगर तुम नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें जानवर बना दूँगी।"

"इसके अलावा तुम और कर भी क्या सकती हो? तुम ये भी करके देख लो, शायद तुम्हें परियों की शक्तियों का अनुमान नहीं है?"

जादूगरनी ने राजकुमार को जादू से घोड़ा बना दिया। परियों ने जब घोड़ा बने राजकुमार को देखा तो वे सब कुछ समझ गयीं। उन्होंने उसे एकान्त में ले जाकर पुनः राजकुमार बना दिया। अब वे तीनों जल्दी से जंगल पार करने लगे।

जब जादूगरनी ने देखा कि राजकुमार अपने असली रूप में आ गया है तो उसने फिर से चुपके से उसे चींटी बना दिया ताकि उसे परियाँ देख न सकें। लेकिन परियों को तुरन्त इस बारे में पता चल गया और उन्होंने पुनः राजकुमार को असली रूप में ला दिया। अब परियों ने सोचा कि इस जादूगरनी को सबक सिखाना होगा। ऐसा निश्चय करके दोनों ने राजकुमार को एक जगह छिपा दिया और वे दोनों उस जादूगरनी को ढूँढ़ने लगीं। उन्होंने अपनी विद्या से जादूगरनी को ढूँढ़कर उसका समस्त जादू नष्ट करके उसे बन्दी बना लिया और आगे बढ़ गयीं। जब जादूगरनी ने देखा कि मेरा जादू काम नहीं कर रहा है, तो उसे बहुत पश्चाताप हुआ। उसने दोनों परियों और राजकुमार से अपनी रिहाई के लिए बहुत प्रार्थना की। परियों ने उसे छोड़कर कहा कि-, "अगर फिर कभी तुम किसी पर स्वार्थ या द्वेषवश अपनी विद्या का प्रयोग करोगी तो तुम्हारी समस्त विद्याएँ पुनः नष्ट हो जायेगीं।" यह कहकर दोनों परियों ने जादूगरनी को छोड़ दिया और राजकुमार के साथ आगे बढ़ गयीं।

संस्कार सन्देश

हमें स्वार्थवश किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिए, अन्यथा एक दिन स्वयं की हानि होती है।

लेखिका

राशि (कक्षा- 4)
प्रा० वि० बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)